

Chachi Ka Sex Bhara Pyar-1

Added : 2015-11-25 01:05:19

मेरा नाम राजवीर है, मैं हरियाणा के जिला रोहतक का रहने वाला हूँ। मेरी उम्र 30 साल है और हाइट लगभग 6 फीट की है।

मैं देखने में एक आकर्षक युवक हूँ और एक बड़ी आई कंपनी में सीनियर ऑपरेशन एग्जिक्यूटिव हूँ।

दोस्तो.. आज मैं आपको अपनी पहली चुदाई के बारे में बताने जा रहा हूँ। किसी की भावनाओं को ठेस ना लगे इसलिए मैंने कहानी के पात्रों और जगह के नाम बदल दिए हैं।

यह मेरी अपनी आप बीती हुई सच्ची घटना है।

बात उन दिनों की है.. जब मैं 12वीं क्लास में पढ़ता था और कोई 18 साल का रहा होऊँगा। मैं अपने पापा के बहुत ही खास दोस्त के पास रहता था.. क्योंकि मेरे पापा जी का ट्रान्सफर ऐसी जगह हो गया था जहाँ पर 10 वीं के बाद स्कूल नहीं था.. इसलिए आगे की पढ़ाई के लिए पापा ने अपने दोस्त से वचिार-वमिर्श करके उन्हीं के पास एक स्कूल में दाखिला दिला दिया था। दाखिला होने के बाद.. मैं अपनी पढ़ाई में जुट गया।

मेरे पापा के दोस्त के मकान में दो हस्सिसे थे.. एक हस्सिसे में उनका छोटा भाई और दूसरे हस्सिसे में वो खुद रहते थे। मुझे अपनी पढ़ाई और रहने के लिए आगे की तरफ बैठक वाला कमरा दे दिया गया था। मेरे खाने का इंतज़ाम भी पापा के दोस्त.. जनिहें मैं चाचा जी कहता हूँ.. के पास ही किया था।

रहने और खाने के खर्चे आदि की पापा से उनकी क्या बात हुई.. मुझे नहीं मालूम था और ना ही मैंने ज्यादा इस बारे में सोचा.. ना ही कभी उनसे पूछा।
वैसे भी मैं शुरू से ही थोड़ा शर्मीले स्वाभाव का था और किसी से जल्दी घुल-मलि नहीं पाता था। मुझे थोड़ा समय लगता था दूसरों के साथ एडजस्ट होने में।

पापा के दोस्त की पत्नी.. जनिहें मैं चाची जी कहता हूँ और जनिका नाम सुमन है.. वो जानती थीं कि मैं अपने मामी-पापा को याद करके थोड़ा उदास रहता हूँ.. इसलिए वो हर तरह से मुझे खुश रखने का प्रयत्न करती थीं।

वो हमेशा मुझसे हँसी-मजाक करती रहती थीं इसलिए मैं थोड़ा उनके साथ खुल के बात कर लेता था.. लेकिन ये सब मर्यादा में होता था।

पापा के दोस्त के छोटे भाई और बीवी थोड़ा गुस्से वाले थे.. इसलिए मेरी उनसे ज्यादा नहीं पटती थी और मैं उनसे दूर ही रहता था।

शुरू के तीन-चार महीने सब अच्छा चलता रहा.. पर उसके बाद मैं ना जाने क्यों धीरे-धीरे सुमन चाची की तरफ आकर्षित होने लगा और उनका साथ मुझे अच्छा लगने लगा। मुझ पर भी अब जवानी का नशा चढ़ने लगा था और किसी लड़की का साथ पाने की इच्छा बल पकड़ने लगी थी।

दोस्तो.. यह उम्र ही ऐसी होती है.. फरि सुमन चाची थीं भी तो बला की खूबसूरत.. और उनकी उम्र भी मुश्कलि 26-27 साल की ही होगी, बिल्कुल गोरा रंग.. तराशा हुआ हूर सा बदन.. दो बच्चों की माँ होने पर भी उनका शरीर किसी नवयौवना जैसा ही लगता था।

उस समय उनकी बड़ी बेटी की उम्र 6 साल थी और छोटे बेटे की उम्र 4 साल के आसपास थी..

पर मेरी चाची ने अपने शरीर का बहुत ख्याल रखा था.. इसलिए कोई नहीं कह सकता था कि वो दो बच्चों की माँ हैं। कसे हुए और मस्त मम्मे.. मखमली गोरा पेट.. और उस पर उनकी लचकती कमर.. जब

वो कूलहे मटका कर चलती थीं.. तो मेरा दलि मचल जाता था। मेरा दलि करता था कडिनको पकड़ कर अभी चोद दूँ।

दोस्तो.. आप भी सोचेंगे कडिअभी मैंने लखा कडिमैं शर्मीला हूँ.. और अभी चुदाई की बात कर रहा हूँ। तो बात ऐसी है कडिस्कूल की पढाई के समय से ही मैंने भी इस वषिय पर थोड़ा-थोड़ा जानना और पढ़ना शुरू कर दिया था। सेक्स क्या है और चुदाई कैसे करते हैं.. यह सब छोटी उम्र से ही जान गया था।

मैंने एक-दो बार उन्हें छूने की कोशिश भी की.. पर फरि डर जाता था कडिमेरी ऐसी हरकतों से बात बगिड़ सकती है और कहीं नाराज होकर उन्होंने चाचा जी को बता दिया तो हो गई पढाई.. और मामी-पापा की डांट अलग पड़ेगी। हो सकता है.. इसके बाद वो मुझे अपने पास बुला लें.. शर्मदिगी उठानी पड़ेगी.. वो अलग..

पर कहते हैं ना.. कडिअगर आप दलि से कुछ माँगो.. तो मलि ही जाता है। हुआ यों कडिचाचा जी को अपनी नौकरी के सलिसलें में 6-7 महीने की लएि बहिर जाना पड़ा। बहिर में भी उनका काम घूमने-फरिने का था.. इसलएि वो परवारि को भी साथ नहीं ले जा सकते थे। दूसरे मेरी भी ज़मिमेदारी भी पापा जी ने उन्हीं को दे रखी थी इसलएि वो अकेले ही जा रहे थे।

जब वो जाने लगे तो मुझसे बोले- राजवीर.. चाची का और बच्चों का खयाल रखना.. कोई बाज़ार का.. या फरि छोटा-मोटा काम हो.. तो कर देना। मैंने कहा- चाचा जी.. आप नश्चिन्त हो कर जाएं.. मैं सब सम्भाल लूँगा। मेरे ऐसा कहने पर चाचा जी खुश हो कर चले गए।

कुछ दनि ऐसे ही गुजर गए और मैं फरि से अपनी पुरानी हरकतों पर उतर आया। मैं सुमन चाची के आस-पास रहने की कोशिश करने लगा। चाचा जी को गए दो महीने होने को आए.. अब चाची थोड़ी उदास सी रहने लगी थीं.. मैंने पूछा भी कडिआप उदास क्यों रहती हैं.. तो वो हंस कर टाल देती थीं।

एक दनि.. जब मैं स्कूल से वापसि आया तो देखा कडिचाचा जी के छोटे भाई के घर पर ताला लगा है। फरि मैं चाचा जी की तरफ़ गया.. तो उधर भी कोई नहीं था। मैं जैसे ही वापसि जाने लगा.. मुझे बाहर वाले बाथरूम से कडिसी के नहाने की आवाज़ आई। मैंने आवाज़ लगाई.. तो सुमन चाची बोलीं- मैं नहा रही हूँ.. तुम्हारा खाना रखा है.. खा लो। मैंने कहा- ठीक है..

पर तभी मेरे दमिग में एक खुराफात आई.. और मैंने सोचा कडिचाची को नहाते हुए देखना चाहिए। फरि मैं धीरे-धीरे बाथरूम के दरवाजे के पास गया और कोई छेद ढूँढने लगा। फरि थोड़ी सी कोशिश करने पर एक छोटा सा छेद दखि गया। मैंने जैसे ही छेद पर आँख लगाई.. मेरा दमिग घूम गया। चाची अपने चूत में उंगली कर रही थीं.. ये देख कर मेरा लंड खड़ा होने लगा।

दोस्तो.. मैं दूसरे लोगों की तरह तो नहीं कहता कडिमेरा लंड बहुत लंबा व मोटा है.. भगवान जाने वो सच कहते हैं या झूठ.. पर मेरे लंड लगभग 6.7 इंच लंबा और 3.8 इंच गोलाई में मोटा है और खड़ा होने पर एकदम सख्त हो जाता है।

चाची को चूत में उंगली करते देख कर मेरा हाथ अपने लंड पर चला गया और मैं चाची को देख कर मस्त हुआ जा रहा था।

तभी चाची को लगा कडिबाहर कोई है.. और उन्हींने ज़ोर से पूछा- कौन है? मैं डर गया और भाग कर अपने कमरे में चला गया।

कुछ देर बाद सुमन चाची नहा कर आ गई और मुझे खाने के लिए आवाज़ लगाई। मैं डरते-डरते उनके पास गया.. तो वो बिल्कुल नॉर्मल सी लगीं.. उन्होंने मेरे लिए खाना लगा दिया।

मैं चुपचाप खाने लगा.. वो मेरे पास ही बैठ गई और अपने बाल संवारने लगीं। अचानक उन्होंने पूछा- राजवीर दरवाजे के बाहर तुम ही थे ना?

मुझे काटो तो खून नहीं.. मैंने माफी मांगते हुए 'हाँ' कर दी और बोला- दोबारा ऐसा नहीं होगा। वो हंस कर बोलीं- ऐसा करना ग़लत बात होती है.. वैसे तुम देख क्या रहे थे? मैंने बोला- कुछ नहीं..

पर तभी वो थोड़ा गुस्से में बोलीं- सच बताओ.. नहीं तो तुम्हारे मामी-पापा को बता दूँगी। मैं डर गया और उनसे दुबारा माफी मांगने लगा। वो फरि बोलीं- ठीक है.. मैं किसी को नहीं बताऊँगी.. पर तुम सच बताओ.. क्या देख रहे थे?

मैंने डरते-डरते बोला- मैं आपको ही देख रहा था.. वो बोलीं- क्यों? मैंने फरि धीरे से कहा- आप मुझे बहुत अच्छी लगती हैं। वो हंस दीं और बोलीं- और क्या देखा.. साफ-साफ बताओ?

अब मैं थोड़ा नॉर्मल हो चुका था, मैं बोला- आप अपनी चूत में उंगली कर रही थीं.. वो थोड़ी सकपकाई और बोलीं- ठीक है.. ठीक है.. अब दुबारा ऐसी हरकत मत करना।

बात आई गई हो गई.. पर उस दिन के बाद सुमन चाची का व्यवहार कुछ बदल सा गया था, अब वो भी मुझे किसी ना किसी बहाने छूने लग गई थीं और खुल कर हँसी-मज़ाक करने लग गई थीं।

फरि वो दिन भी आया.. जब मैंने अपनी चाची को जी भर के चोदा.. यह बात सतिम्बर की है, मेरे मडि-टर्म एग्जाम चल रहे थे और अगले एग्जाम से पहले 3 दिन की छुट्टी थी इसलिए मैं भी थोड़ा रलैक्स था। उस दिन मैं 11 बजे पढ़ने बैठा और फरि 4 बजे तक पढ़ता रहा।

फरि हल्का सा नाश्ता करने के बाद मैं सो गया। लगभग 6 बजे आँख खुली.. तो देखा कचिचा जी के छोटे भाई अपनी फैमिली के साथ कहीं जा रहे थे। मैंने पूछा तो बोले- हम सब एक दोस्त की शादी में जा रहे हैं दो दिन बाद आएंगे। मैंने कहा- ठीक है।

मैं भी अपने दोस्तों के साथ घूमने चला गया। लगभग 2 घंटे के बाद वापस आया.. तो सुमन चाची ने कहा- राजवीर फ्रेश हो जाओ.. खाना तैयार है। मैंने कहा- ठीक है। थोड़ी देर बाद मैं फ्रेश हो कर आ गया। इसके बाद सबने मलि कर खाना खाया.. खाना खा कर दोनों बच्चे और मैं टीवी देखने लगे।

टीवी देखते-देखते बच्चे सोने लगे.. तो मैंने चाची को आवाज़ लगाई और वो दोनों बच्चों को सुलाने के लिए अपने कमरे में ले गईं। मैं अभी कुछ देर और टीवी देखना चाहता था.. इसलिए वहीं बैठा रहा। कुछ देर बाद चाची दो कटोरियों में आइसक्रीम लेकर आई और बोलीं- लो खा लो।

मैंने आइसक्रीम ले ली और चाची भी वहीं मेरे साथ सट कर बैठ गई, हम दोनों टीवी देखने लगे। सुमन चाची की नरम गुंदाज़ जाँघें मेरी जाँघों से छूने लगीं.. तो मेरे लंड में सनसनाहट सी होने लगी। टीवी देखते हुए बीच में एक-दो बार मैंने अपना हाथ उनकी जाँघों पर छुआ दिया.. पर उनकी तरफ से कोई एतराज़ नहीं हुआ।

दोस्तों मेरी इस सच्ची कहानी के अगले भाग में आपको मालूम हो जाएगा.. क'आगे क्या हुआ क्या चाची ने मुझे कुछ करने दिया या सब कुछ एक सपना ही होकर रह गया।

कहानी जारी है।

rvs.vision@gmail.com

« [Back To Home](#)

For more sex stories Visit: [AntarVasna.Us](#)